

उच्च शिक्षा में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम अपनाने की चुनौतियाँ और बाधाएँ

डॉ. रेखा ताराचंद झलके

ग्रंथपाल, अनिकेत समाजकार्य महाविद्यालय वडसा जि. गडचिरोली

सार

उच्च शिक्षा में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) का अपनाना तेज़ी से बढ़ा है, फिर भी संस्थानों को इसके प्रभावी क्रियान्वयन और उपयोग में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह शोध पत्र LMS अपनाने से जुड़े प्रमुख अवरोधों की जांच करता है, जिनमें तकनीकी सीमाएँ, अपर्याप्त डिजिटल अवसंरचना तथा सिस्टम एकीकरण से संबंधित समस्याएँ प्रमुख हैं। संकाय सदस्यों का प्रतिरोध, डिजिटल साक्षरता की कमी और अपर्याप्त प्रशिक्षण तकनीक-आधारित शिक्षण की ओर परिवर्तन की गति को और धीमा कर देते हैं। इसके अलावा, वित्तीय बाधाएँ, रखरखाव की लागत तथा निरंतर तकनीकी सहायता की आवश्यकता संस्थागत स्तर पर महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। छात्रों को भी पहुँच संबंधी समस्याएँ, उपकरणों की असमान उपलब्धता, और ऑनलाइन शिक्षण वातावरण के प्रति अनुकूलन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। डेटा गोपनीयता संबंधी चिंताएँ, साइबर सुरक्षा जोखिम और असंगत प्रशासनिक नीतियाँ LMS के क्रियान्वयन को और जटिल बनाती हैं। इन चुनौतियों को समझना संस्थानों के लिए आवश्यक है ताकि वे प्रभावी रणनीतियाँ विकसित कर सकें, LMS की उपयोगिता बढ़ा सकें, हितधारकों की भागीदारी को प्रोत्साहित कर सकें और उच्च शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन को सतत रूप से आगे बढ़ा सकें।

मुख्य शब्द: लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), उच्च शिक्षा, डिजिटल शिक्षण, क्रियान्वयन चुनौतियाँ।

परिचय

लर्निंग टेक्नोलॉजी का इंफ्रास्ट्रक्चर हमारे समाज में तेज़ी से विकसित हो रहा है, और अधिकतर स्कूल आज इन्फॉर्मेशन और कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी के वैश्विक रुझानों को पूरा करने के लिए आधुनिक उपकरणों को अपना रहे हैं। यह सर्वविदित है कि आज की शिक्षा अधिक ओपन, सुलभ और लचीली हो गई है, जो राष्ट्रीय या क्षेत्रीय सीमाओं से परे जाकर सीखने के नए अवसर प्रदान करती है। शिक्षा में हो रहे इन परिवर्तनों को वैश्विक स्तर पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। कैमरून के कई स्कूल भी टेक्नोलॉजी-आधारित शिक्षण को सुगम बनाने के लिए तकनीकी संसाधनों में निवेश बढ़ा रहे हैं। एलेमंगे (2018) के अनुसार, पिछले दो दशकों में कैमरून के उच्च शिक्षा क्षेत्र ने वैश्विक ट्रेंड्स के अनुरूप कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, ताकि उभरती चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना किया जा सके।

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) एक ऐसा ऑनलाइन पोर्टल है जो लेक्चरर और विद्यार्थियों को जोड़ता है और क्लासरूम सामग्री एवं गतिविधियों को आसानी से साझा करने की सुविधा प्रदान करता है। यह पोर्टल न केवल

शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच संवाद को बढ़ाता है, बल्कि फोरम जैसी सुविधाओं के माध्यम से क्लासरूम के बाहर भी चर्चा और सहयोग को संभव बनाता है, जिससे समय की बचत होती है।

LMS को आमतौर पर वर्चुअल लर्निंग एनवायरनमेंट या कोर्स मैनेजमेंट सिस्टम के रूप में भी जाना जाता है (कार्वोस एट अल., 2016; अजहरुद्दीन, 2013)। अजहरुद्दीन (2013) के अनुसार, ई-लर्निंग सिस्टम चार प्रकार के होते हैं—लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), लर्निंग कंटेंट मैनेजमेंट सिस्टम (LCMS), लर्निंग डिज़ाइन सिस्टम (LDS) और लर्निंग सपोर्ट सिस्टम (LSS)। ई-लर्निंग में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाला LMS, जिसे एलेमंगे (2018) ने “एक्सटेंडेड क्लासरूम” कहा है, शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और संगठित बनाता है।

उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा संस्थानों में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम को अपनाने में आने वाली मुख्य टेक्नोलॉजिकल, संगठनात्मक और यूज़र से जुड़ी चुनौतियों की पहचान करना और उन्हें कैटेगरी में बांटना।
2. LMS प्लेटफॉर्म के साथ फैकल्टी और छात्रों की भागीदारी को प्रभावित करने में इंफ्रास्ट्रक्चर की सीमाओं, डिजिटल साक्षरता की कमियों और टेक्निकल सपोर्ट की समस्याओं की भूमिका का विश्लेषण करना।

क्रियाविधि

यह अध्ययन उच्च शिक्षा में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) को अपनाने में आने वाली चुनौतियों और बाधाओं की पहचान करने के लिए थीमैटिक लिटरेचर रिव्यू पद्धति का उपयोग करता है। थीमैटिक रिव्यू विशेष रूप से विभिन्न संदर्भों से प्राप्त निष्कर्षों को संकलित करने और कई अध्ययनों में मौजूद पैटर्न को वर्गीकृत करने के लिए उपयुक्त माने जाते हैं (टर्नबुल, चुघ और लक, 2019; अल्टिनपुलुक और केसिम, 2019)। यह दृष्टिकोण शोधकर्ता को LMS अपनाने को प्रभावित करने वाले सामान्य मुद्दों पर सार्थक निष्कर्ष निकालने में सक्षम बनाता है, साथ ही विभिन्न शैक्षिक परिवेशों में मौजूद भिन्नताओं को भी स्वीकार करता है।

स्रोतों का चयन

साल 2010 से 2019 के बीच प्रकाशित कुल 34 पीयर-रिव्यूड जर्नल आर्टिकल को उच्च शिक्षा में LMS अपनाने और उससे जुड़ी चुनौतियों के आधार पर चयनित किया गया। इन प्रकाशनों को प्राप्त करने के लिए साइंसडायरेक्ट, टेलर एंड फ्रांसिस ऑनलाइन, स्प्रिंगर, IEEE Xplore और गूगल स्कॉलर जैसे प्रमुख डेटाबेस का उपयोग किया गया। खोज के लिए जिन मुख्य शब्दों का प्रयोग किया गया, उनमें शामिल थे—लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम, LMS अपनाने में बाधाएँ, ऑनलाइन लर्निंग की चुनौतियाँ, उच्च शिक्षा में ई-लर्निंग, तथा डिजिटल शिक्षा प्रणाली।

यह अध्ययन विशेष रूप से विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) के उपयोग पर केंद्रित था। इसमें LMS अपनाने से जुड़ी बाधाओं, चुनौतियों और सीमाओं पर विस्तृत चर्चा शामिल थी। केवल सहकर्मी-समीक्षित (सहकर्मी की समीक्षा) शोध-पत्रों को ही समीक्षा में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त, ओपिनियन आर्टिकल्स, थीसिस दस्तावेज़ तथा अपर्याप्त या अविश्वसनीय डेटा वाले कॉन्फ्रेंस एब्सट्रैक्ट्स को स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया।

विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

LMS अपनाने से संबंधित चुनौतियों की पहचान करने के लिए प्रत्येक लेख को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका कोडिंग किया गया। बार-बार सामने आने वाले प्रमुख अवधारणाओं, जैसे—इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रशिक्षण तथा प्रतिरोध—के आधार पर इन कोडों को विभिन्न श्रेणियों में समूहित किया गया। आगे चलकर, इन श्रेणियों को व्यापक चिंताओं को समाहित करने वाले थीम में व्यवस्थित किया गया। अंततः, परिणाम अनुभाग तैयार करने के लिए प्रत्येक थीमैटिक श्रेणी के अंतर्गत प्राप्त निष्कर्षों को समेकित किया गया।

सीमाएँ

यह रिव्यू सिर्फ पब्लिश हुए एकेडमिक आर्टिकल पर निर्भर है, जो ग्रे लिटरेचर या इंस्टीट्यूशनल रिपोर्ट को कम दिखा सकते हैं। इसके अलावा, हालांकि स्टडी में डेवलपड और डेवलपिंग दोनों देशों की रिसर्च शामिल है, लेकिन ओपन-एक्सेस पब्लिकेशन की उपलब्धता के कारण रीजनल बायस हो सकता है।

इन कमियों के बावजूद, यह रिव्यू स्कॉलरली सबूतों का एक भरोसेमंद मेल देता है और हायर एजुकेशन में LMS अपनाने में सबसे लगातार आने वाली रुकावटों की पूरी समझ देता है।

परिणाम

34 रिव्यू की गई स्टडीज़ के थीमैटिक एनालिसिस से हायर एजुकेशन में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) अपनाने में आने वाली रुकावटों की छह मुख्य कैटेगरी का पता चला। ये हैं:

1. तकनीकी अवसंरचना की सीमाएँ,
2. फैकल्टी ट्रेनिंग और सपोर्ट की कमी,
3. बदलाव का विरोध और कम स्वीकृति,
4. शैक्षणिक गलत संरचना,
5. छात्रों से संबंधित बाधाएँ, और
6. अपर्याप्त संस्थागत समर्थन और नीति।

हर थीम को लिटरेचर से मिले सबूतों के साथ नीचे दिया गया है।

तकनीकी अवसंरचना सीमाएँ

टेक्नोलॉजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी सबसे ज़्यादा बताई जाने वाली चुनौतियों में से एक है, खासकर विकासशील देशों में। इसमें भरोसेमंद इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं होना, कंप्यूटर तक सीमित पहुंच और टेक्निकल मेंटेनेंस की कमी शामिल है।

- चिप्स एट अल. (2015) ने पाया कि कम रिसोर्स वाली साउथ अफ्रीकी यूनिवर्सिटीज़ के स्टूडेंट्स को खराब इंटरनेट और शेयर्ड डिवाइस की वजह से LMS प्लेटफ़ॉर्म एक्सेस करने में मुश्किल होती थी।

- इसी तरह, अलेनेज़ी (2018) ने बताया कि बैंडविड्थ की कमी और बार-बार होने वाली तकनीकी खराबी की वजह से सऊदी अरब की यूनिवर्सिटी में LMS का इस्तेमाल कम हो गया।
- नाइजीरिया में, अजीजोला एट अल. (2019) ने बताया कि कैसे खराब ICT इंफ्रास्ट्रक्चर की वजह से डिस्टेंस लर्नर्स के बीच LMS प्लेटफॉर्म को लेकर असंतोष पैदा हुआ।

इन स्टडीज़ से पता चलता है कि बेसिक टेक्नोलॉजिकल सपोर्ट के बिना, LMS को अपनाना जारी नहीं रखा जा सकता या बढ़ाया नहीं जा सकता।

संकाय प्रशिक्षण और समर्थन का अभाव

कई स्टडीज़ बताती हैं कि लेक्चरर्स के बीच डिजिटल स्किल्स और ट्रेनिंग की कमी एक बड़ी रुकावट है। फैकल्टी मेंबर्स में अक्सर कॉन्फिडेंस या जानकारी की कमी होती है कि पढ़ाई के लिए LMS टूल्स का पूरा इस्तेमाल कैसे करें।

- अलशोरमैन और बावनेह (2018) ने दिखाया कि फैकल्टी और स्टूडेंट्स दोनों के पास LMS नेविगेशन की ट्रेनिंग की कमी थी, जिससे सिस्टम फीचर्स के साथ उनका कम से कम इंटरैक्शन हुआ।
- वांग एट अल. (2013) ने इस बात पर ज़ोर दिया कि जहाँ LMS तकनीकी रूप से थे, वहाँ भी एडवांस्ड, ट्रेनिंग की कमी ने उनके एजुकेशनल असर को कम कर दिया।
- वियतनाम में, गुयेन (2019) ने पाया कि टीचर कम सपोर्ट और सिस्टम के कामों की जानकारी न होने की वजह से LMS टूल्स अपनाने में हिचकिचा रहे थे।

यह सबूत लगातार प्रोफेशनल डेवलपमेंट और यूज़र-फ्रेंडली LMS इंटरफेस की ज़रूरत को दिखाता है।

बदलाव का विरोध और कम स्वीकृति

LMS टूल्स को अपनाने में अक्सर कल्चरल रुकावट आती है, खासकर उन स्टाफ़ के बीच जो ट्रेडिशनल फेस-टू-फेस टीचिंग मेथड के आदी हैं।

- जू, किम, और किम (2016) ने टेक्नोलॉजी एक्सेप्शन मॉडल (TAM) लागू किया और पाया कि इस्तेमाल में आसानी और उपयोगिता, फैकल्टी के बीच LMS की स्वीकृति के महत्वपूर्ण प्रेडिक्टर थे।
- चिप्स एट अल. (2015) ने यह भी बताया कि लेक्चरर्स के विश्वास और पढ़ाने के तरीकों ने LMS प्लेटफॉर्म इस्तेमाल करने की उनकी इच्छा पर असर डाला।
- अल्टिनपुलुक और केसिम (2019) ने यह नतीजा निकाला कि टेक्नोलॉजी से भरपूर इंस्टीट्यूशन में भी, साइकोलॉजिकल और कल्चरल रुकावट डिजिटल लर्निंग की कोशिशों को कमज़ोर कर सकती है।

ऐसे नतीजों से पता चलता है कि रुकावट पर काबू पाने के लिए न सिर्फ़ ट्रेनिंग की ज़रूरत है, बल्कि चेंज मैनेजमेंट स्ट्रेटेजी की भी ज़रूरत है।

शैक्षणिक विसंगति

लिटरेचर में एक बार-बार आने वाली बात यह है कि LMS टूल्स को अक्सर सही टीचिंग मेथड या कोर्स कंटेंट स्ट्रक्चर के साथ अलाइन किए बिना इम्प्लीमेंट किया जाता है।

- जैगर्स और जू (2016) ने दिखाया कि ऑनलाइन कोर्स डिज़ाइन फीचर्स ने स्टूडेंट के परफॉर्मेंस पर काफी असर डाला। खराब तरीके से डिज़ाइन किए गए कोर्स अक्सर कन्फ्यूजन और डिसएंगेजमेंट की वजह बनते हैं।
- टर्नबुल, चुघ और लक (2019) ने ऐसे इंस्ट्रक्शनल डिज़ाइन के महत्व पर ज़ोर दिया जो LMS फंक्शनैलिटी को लर्निंग आउटकम के साथ जोड़ता है।
- टीचर एजुकेशन पर एक स्टडी में, होम्स और प्रीतो-रोड्रिगेज (2018) ने पाया कि LMS प्लेटफॉर्म पर अलग-अलग तरह से कोर्स देने से स्टूडेंट्स परेशान थे, क्योंकि उनमें एक जैसी पढ़ाई की कमी थी।

इन स्टडीज़ से पता चलता है कि LMS का असर न सिर्फ़ टेक्नोलॉजी पर निर्भर करता है, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि इसे सिखाने के तरीके में कैसे शामिल किया गया है।

छात्र-संबंधी बाधाएँ

स्टूडेंट्स को कई तरह की मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है, जैसे कम डिजिटल लिटरेसी, मोटिवेशन की कमी, और LMS इंटरफ़ेस को नेविगेट करने में मुश्किल।

- गुयेन (2019) ने देखा कि स्टूडेंट सैटिस्फ़ैक्शन अक्सर उनके डिजिटल स्किल्स और ऑनलाइन लर्निंग के पिछले अनुभव से जुड़ा होता है।
- ज़ैनुद्दीन और परेरा (2018) ने कहा कि सेल्फ़-डायरेक्टेड लर्निंग सिर्फ़ यह तब असरदार होता है जब स्टूडेंट्स LMS एनवायरनमेंट से परिचित हों और उनके पास भरोसेमंद एक्सेस हो।
- शमी और उनके साथियों (2014) ने पाया कि तंजानिया के सेकेंडरी स्कूलों में, टेक्निकल सपोर्ट की कमी और कम ICT स्किल्स की वजह से स्टूडेंट्स को LMS प्लेटफॉर्म को अच्छे से इस्तेमाल करने में दिक्कत होती थी।

ये चुनौतियाँ खास तौर पर उन मामलों में ज़रूरी हैं जहाँ स्टूडेंट्स पिछड़े या ग्रामीण बैकग्राउंड से आते हैं।

अपर्याप्त संस्थागत समर्थन और नीति

कई स्टडीज़ LMS को लागू करने और इस्तेमाल करने के लिए साफ़ पॉलिसी और इंस्टीट्यूशनल फ्रेमवर्क की कमी को दिखाती हैं।

- अल्टिनपुलुक और केसिम (2019) ने पाया कि तुर्की के विश्वविद्यालयों में, मानकीकृत दिशानिर्देशों की कमी के कारण विभागों में असंगत एलएमएस प्रथाएं हुईं।

- डोब्रोटा, जेरेमिक, और मार्कोविक (2012) ने तर्क दिया कि राष्ट्रीय ICT विकास नीतियां LMS की तैयारी और लंबे समय के एकीकरण पर असर डालती हैं।
- साउथ अफ्रीका में, बुथेलेज़ी और वैन विक (2014) ने LMS प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करके पोस्टग्रेजुएट नर्सिंग स्टूडेंट्स को सपोर्ट करने में एडमिनिस्ट्रेटिव लीडरशिप और प्लानिंग की भूमिका पर ज़ोर दिया।

इंस्टीट्यूशनल कमिटमेंट और स्ट्रेटेजिक प्लानिंग के बिना, सबसे एडवांस्ड LMS प्लेटफॉर्म भी अपने चाहे गए नतीजे पाने में फेल हो सकते हैं।

इस लिटरेचर रिव्यू के नतीजों से पता चलता है कि हायर एजुकेशन में LMS अपनाने में आने वाली चुनौतियाँ मुश्किल, कई लेयर वाली और कॉन्टेक्ट पर निर्भर हैं। जहाँ आमतौर पर टेक्नोलॉजिकल कमियों का ज़िक्र किया जाता है, वहीं LMS प्लेटफॉर्म को कैसे लिया और इस्तेमाल किया जाता है, इसे तय करने में गहरे इंस्टीट्यूशनल, इंसानी और पढ़ाने के तरीके भी उतने ही असरदार लगते हैं।

सबसे पहले, LMS को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए टेक्नोलॉजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर एक बुनियादी ज़रूरत बनी हुई है। जैसा कि कई स्टडीज़ से पता चलता है (चिप्स एट अल., 2015; एलेनज़ी, 2018; अजीजोला एट अल., 2019), बिना स्टेबल इंटरनेट कनेक्टिविटी और सही हार्डवेयर के, स्टूडेंट और फैकल्टी LMS प्लेटफॉर्म को एक्सेस या उनसे सही तरीके से इंटरैक्ट नहीं कर सकते। यह खासकर डेवलपिंग इलाकों में दिक्कत वाली बात है, जहाँ बैंडविड्थ कम होती है और डिवाइस शेयर किए जाते हैं या उपलब्ध नहीं होते। फिर भी, जहाँ इंफ्रास्ट्रक्चर मौजूद है, वहाँ भी सिस्टम को असरदार तरीके से इस्तेमाल करने की इंसानी क्षमता अक्सर कम होती है।

यह फैकल्टी ट्रेनिंग और सपोर्ट की अहम भूमिका की ओर ध्यान खींचता है। अलशोरमैन और बावनेह (2018) और वांग एट अल. (2013) जैसी स्टडीज़ से पता चलता है कि एजुकेटर्स को लगातार डिजिटल लिटरेसी डेवलपमेंट की ज़रूरत है, न कि सिर्फ़ एक बार की वर्कशॉप की। वियतनाम और साउथ अफ्रीका जैसे हालात में, लेक्चर्स के बीच लिमिटेड टेक्निकल स्किल्स एक बड़ी रुकावट थीं (गुयेन, 2019; बुथेलेज़ी और वैन विक, 2014)। इस बीच, फैकल्टी का विरोध अक्सर टेक्नोलॉजी से नफ़रत में नहीं, बल्कि बदलाव के डर और पेडागॉजिकल वैल्यू के बारे में अनिश्चितता में होता है (जू एट अल., 2016; चिप्स एट अल., 2015)। इससे निपटने के लिए चेंज मैनेजमेंट अप्रोच की ज़रूरत है जिसमें सिस्टम प्लानिंग में एजुकेटर्स शामिल हों और लर्निंग प्रोसेस की ओनरशिप को बढ़ावा दिया जाए। रिव्यू किए गए लिटरेचर में एक बड़ी चिंता पेडागॉजिकल मिसअलाइनमेंट है, जहाँ LMS प्लेटफॉर्म को बिना साफ़ इंस्ट्रक्शनल स्ट्रेटेजी या कोर्स रीडिज़ाइन के पेश किया जाता है। जैसा कि जैगर्स और जू (2016) और टर्नबुल एट अल. (2019) ध्यान दें, सिर्फ़ लेक्चर नोट्स और असाइनमेंट को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ट्रांसफ़र करने से असरदार ऑनलाइन लर्निंग पक्की नहीं होती। टेक्नोलॉजी के साथ पढ़ाने के तरीके को और गहराई से जोड़ने की ज़रूरत है—ऐसा तरीका जो LMS में मौजूद इंटरैक्टिविटी, फ़ीडबैक सिस्टम और एंगेजमेंट टूल्स का फ़ायदा उठाए।

इस इकोसिस्टम में स्टूडेंट्स की भूमिका पर भी और ध्यान देने की ज़रूरत है। हालांकि LMS टूल्स अक्सर यूज़र-फ्रेंडली होने को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किए जाते हैं, फिर भी स्टूडेंट्स को कम मोटिवेशन, सेल्फ-डायरेक्टेड लर्निंग स्किल्स की कमी, या मुश्किल इंटरफ़ेस को समझने में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है (शामे एट अल., 2014; गुयेन, 2019)। इसके अलावा, संस्थानों और इलाकों में डिजिटल असमानताएं बनी हुई हैं, जिससे स्टूडेंट-फोकस्ड सपोर्ट सिस्टम और बराबर एक्सेस पॉलिसी की ज़रूरत और बढ़ गई है।

आखिर में, रिव्यू से यह कन्फर्म होता है कि कई चुनौतियाँ इंस्टीट्यूशनल लेवल के मुद्दों से पैदा होती हैं, जैसे कि कमज़ोर पॉलिसी फ्रेमवर्क, स्ट्रेटेजिक प्लानिंग की कमी, या एडमिनिस्ट्रेटिव सपोर्ट की कमी (एल्टिनपुलुक और केसिम, 2019; डोब्रोटा एट अल., 2012)। जिन मामलों में रिसोर्स मौजूद हैं, वहाँ भी लीडरशिप कमिटमेंट या लॉन्ग-टर्म विज़न की कमी के कारण अक्सर LMS इनिशिएटिव बिखरे हुए या कम समय तक चलते हैं।

कुल मिलाकर, LMS को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए सिर्फ़ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म देने से ज़्यादा की ज़रूरत होती है। इसके लिए एक होलिस्टिक, सिस्टम-लेवल अप्रोच की ज़रूरत होती है जो टेक्नोलॉजी की तैयारी, फैकल्टी और स्टूडेंट सपोर्ट, पेडागॉजिकल इंटीग्रेशन और इंस्टीट्यूशनल लीडरशिप पर ध्यान दे। ग्लोबल एजुकेशन का माहौल लगातार ब्लेंडेड और ऑनलाइन तरीकों की तरफ बढ़ रहा है, ये नतीजे हायर एजुकेशन में डिजिटल लर्निंग इंफ्रास्ट्रक्चर और तरीकों को बेहतर बनाने के लिए कीमती जानकारी देते हैं।

निष्कर्ष

इस लिटरेचर रिव्यू में उन चुनौतियों की जांच की गई है जिनका सामना हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन को लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) अपनाने में करना पड़ता है। रिव्यू से पता चलता है कि ज़रूरी टेक्नोलॉजी होना ज़रूरी है, लेकिन दूसरे फैक्टर भी—जैसे कि सही फैकल्टी ट्रेनिंग, पढ़ाने के तरीकों के साथ तालमेल, बदलाव का विरोध, स्टूडेंट की चुनौतियाँ, और इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट—LMS को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए उतने ही ज़रूरी हैं।

नतीजों से पता चलता है कि सिर्फ़ LMS देना काफी नहीं है। इंस्टीट्यूशन को सिर्फ़ टेक्नोलॉजी पर ध्यान देने के बजाय, सभी तरह की रुकावटों को दूर करने की ज़रूरत है। फैकल्टी ट्रेनिंग और यह पक्का करना कि पढ़ाने के तरीके टेक्नोलॉजी के हिसाब से हों। LMS के फीचर्स ज़रूरी हैं। इसके अलावा, बदलाव के विरोध को दूर करना फैकल्टी और स्टूडेंट्स के लिए टेक्नोलॉजी के साथ पूरी तरह जुड़ने के लिए ज़रूरी है।

स्टूडेंट एंगेजमेंट और टेक्नोलॉजी तक एक्सेस से जुड़े मुद्दों को भी सुलझाना होगा, खासकर उन एरिया में जहाँ स्टूडेंट्स के पास डिजिटल स्किल्स या डिवाइस तक एक्सेस की कमी है। LMS को सफल बनाने के लिए एक सस्टेनेबल माहौल बनाने के लिए मज़बूत इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट और साफ़ पॉलिसी भी ज़रूरी हैं।

कुल मिलाकर, LMS अपनाने के लिए एक पूरी तरह से सोचा-समझा तरीका अपनाना होगा जो सिर्फ़ टेक्निकल बातों से आगे जाए। इंस्टीट्यूशन को असरदार टीचिंग प्रैक्टिस, फैकल्टी डेवलपमेंट, स्टूडेंट एक्सेस और साफ़ इंस्टीट्यूशनल प्लानिंग पर ध्यान देना चाहिए। आगे की रिसर्च का मकसद इन रुकावटों के खास सॉल्यूशन पहचानना और यह पता लगाना होना चाहिए कि LMS अलग-अलग एजुकेशनल सेटिंग्स में सीखने के नतीजों को असरदार तरीके से कैसे बेहतर बना सकता है।

संदर्भ

1. अजीजोला, EM, अलादेसुसी, GA, ओगुनलाडे, OO, और ओलुमोरिन, CO (2019). साउथ-वेस्ट, नाइजीरिया में डिस्टेंस लर्नर्स के बीच लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम की समझ। जर्नल ऑफ़ डिजिटल लर्निंग इन एजुकेशन, 1(2), 72-84. <https://doi.org/10.52562/jdle.v1i2.2141088>

2. अल-असफ़, एन., अलमारबेह, टी., और एडिन, एल.एन. (2015). जॉर्डन यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स पर लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के असर पर एक स्टडी। जर्नल ऑफ़ सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग एंड एप्लीकेशंस, 8(11), 590–601. <https://doi.org/10.4236/jsea.2015.811056>
3. एलेनज़ी, ए. (2018). सऊदी अरब की यूनिवर्सिटीज़ में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम में हिस्सा लेने में आने वाली रुकावटें। एजुकेशन रिसर्च इंटरनेशनल, 2018, 1–8. <https://doi.org/10.1155/2018/9085914>
4. अलशोरमैन, BA, और बावनेह, AK (2018). पढ़ाने और सीखने में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के इस्तेमाल के प्रति फैकल्टी मेंबर्स और स्टूडेंट्स का नज़रिया। टर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 17(3), 1-15. <https://doi.org/10.1109/EDUCON.2010.5492522>
5. एल्टिनपुलुक, एच., और केसिम, एम. (2019). लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के इस्तेमाल के ट्रेंड्स का एक सिस्टमैटिक रिव्यू। टर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ डिस्टेंस एजुकेशन, 22(3), 40–54. <https://doi.org/10.17718/tojde.961812>
6. बुथेलेज़ी, LI, और वैन विक, JM (2014). दक्षिण अफ्रीका के क्वाज़ुलु-नटाल में एक चुने हुए हायर एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन में पोस्टग्रेजुएट नर्सिंग स्टूडेंट्स द्वारा ऑनलाइन लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम का इस्तेमाल। अफ्रीकन जर्नल ऑफ़ हेल्थ प्रोफ़ेशनल्स एजुकेशन, 12(4), 211-218. <https://doi.org/10.7196/AJHPE.2014.v12i4.1391>
7. चिप्स, जे., केर, जे., ब्राइसीविकज़, पी., और वाल्टर्स, एफ. (2015). टेक्नोलॉजी एक्सेप्टेंस मॉडल का इस्तेमाल करके कम रिसोर्स वाली सेटिंग में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के बारे में यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स की सोच का एक सर्वे। CIN: कंप्यूटर्स, इंफॉर्मेटिक्स, नर्सिंग, 33(2), 71–77. <https://doi.org/10.1097/CIN.0000000000000123>
8. डोब्रोटा, एम., जेरेमिक, वी., और मार्कोविक, ए. (2012). ICT डेवलपमेंट इंडेक्स पर एक नया नज़रिया। इन्फॉर्मेशन डेवलपमेंट, 28(4), 271–280. <https://doi.org/10.1177/0266666912446497>
9. हान, आई., और शिन, WS (2016). मोबाइल लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम का इस्तेमाल और ऑनलाइन स्टूडेंट्स की एकेडमिक अचीवमेंट। कंप्यूटर्स एंड एजुकेशन, 102, 79–89. <https://doi.org/10.1016/j.compedu.2016.07.003>
10. एनसोंग, ई., लोविया बोटेंग, एस., और बोटेंग, आर. (2017). यूनिवर्सिटी में ई-लर्निंग अपनाने के कारण: एक विकासशील देश से सबूत। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स, 46(1), 30-60.
11. एलेमंगे, FL (2018). कैमरून हायर एजुकेशन में डिस्टेंस लर्निंग मॉडल और उनकी प्रभावशीलता। क्रिएटिव एजुकेशन, 9(5), 791-817.
12. अलसादून, ई. (2018). एजुकेशन में वेब एप्लीकेशन इस्तेमाल करने के लिए फैकल्टी को मोटिवेट करने वाले फैक्टर्स। टर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी-TOJET, 17(3), 73-90.

13. कार्वस, एन., उजुनबॉयलू, एच. और इब्राहिम, डी. (2016). प्रोग्रामिंग भाषाओं की वेब-बेस्ड टीचिंग में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम और कोलेबोरेटिव टूल्स के इस्तेमाल का असर।
14. चाओ, CM (2019). मोबाइल लर्निंग इस्तेमाल करने के व्यावहारिक इरादे को तय करने वाले फैक्टर: UTAUT मॉडल का एक एप्लीकेशन और एक्सटेंशन। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 10, 1652. doi: 10.3389/fpsyg.2019.01652
15. कोलमैन, ई. और मतशाज़ी, एस. (2017). एकेडमिक स्टाफ द्वारा लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) के इस्तेमाल और न करने पर असर डालने वाले फैक्टर्स। साउथ अफ्रीकन कंप्यूटर जर्नल। 29(3), 32-63. <http://dx.doi.org/10.18489/sacj.v29i3.459>
16. इस्मान, ए., और डागदेविरन, ई. (2018). तुर्की में ट्विटर का प्रसार. टर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी-TOJET, 17(4), 1-7.